Global Multidisciplinary Research Journal
A Peer Reviewed/Refereed Bi-Annual Research Journal of Multidisciplinary Researches
Volume 1 Issue 1 September 2016, pp. 43-47
ISSN: 2456-4583
Global Development Society
6, New Tilak Nagar, Firozabad-283203 (UP)

# शिक्षकों के अभिमत पर आधारित बेसिक स्कूलों में संचालित योजनाओं की प्रभावकारिता का अध्ययन

**राम लखन यादव**

शोधकर्ता, जे.एस. यूनिवर्सिटी, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

**प्राप्ति**- 28 अगस्त 2016, **संशोधन**- 31 अगस्त 2016, **स्वीकृति**- 3 सितम्बर 2016

**_सारांश_**

*''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् शिक्षा वही है जो मुक्त करती है। मुक्ति का अर्थ तमाम बन्धनों, अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों से मुक्ति पाना और नई समझ के साथ नई दृष्टि का निर्माण करने से है। विश्व के लगभग सभी समाजों और सभी कालों में शिक्षा का महत्व एक समान बना रहा है। किसी भी राष्ट्र के मानव विकास सूचकांक ने संयोजित होने वाले कारकों में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत कारक है। सुदृढ़ समाज के निर्माण में प्राथमिक शिक्षा मजबूत नींव की भूमिका निभाती है। अगर नींव ही कच्ची हो तो समाज के सृजनात्मक विकास की परिकल्पना करना सम्भव नहीं होता। प्राथमिक शिक्षा के अभाव में शिक्षा की कल्पना करना दिवास्वप्न भी नहीं होगा। यदि प्राथमिक शिक्षा में सुधार नहीं किया गया तो देश का भविष्य निश्चित ही संकटपूर्ण स्थिति में होगा। स्वतंत्र भारत में प्राथमिक शिक्षा की प्रगति हेतु अनेक उपाय किए गए। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को राष्ट्रीय ध्येय के रूप में स्वीकार करने के बाद से ही इसके विस्तार एवं उन्नयन पर बल दिया। 1957 में अखिल भारतीय प्राथमीय शिक्षा परिषद (AICEE) का गठन किया गया। 1979 में निरौपचारिक शिक्षा (Non-Formal Education), 1987-88 में ब्लैक बोर्ड योजना, 1994 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP),1995 में मिड-डे-मील योजना, 2000 में सर्वशिक्षा अभियान व 2001 में शिक्षा गारंटी योजना आदि अनेकों ऐसी शिक्षा संबन्धी योजनाओं को समय-समय पर शुभारंभ किया गया।*

## प्रस्तावना

बच्चे देश का दर्पण हैं। वे राष्ट्र की मुस्कराहट हैं। बच्चे मनोविज्ञान के मूल हैं। वे ही शिक्षक की प्रयोगशाला हैं। बच्चों में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोए जा सकते हैं।

एक सामान्य नियम है कि यदि बुनियाद मजबूत होगी तो उस पर तामीर (बनने वाला) भवन भी उतना ही मजबूत होगा। अत: बालकों की समुचित शिक्षा व्यवस्था करना राज्य एवं समाज का प्रमुख दायित्व है। स्वस्थिर

एवं प्रभावी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से बालक में अनेक प्रकार की चारित्रिक विशेषताओं को विकसित किया जा सकता है, ताकि वे भावी जीवन में एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में तैयार किए जा सकें और राष्ट्र निर्माण में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकें। शायद इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखकर आजादी के बाद से प्राथमिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए समय-समय पर विभिन्न अभिनव प्रयोग करने के साथ नियम भी बनाए गए। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में संविधान के खण्ड 4 के अनुच्छेद 45 में स्पष्ट निर्देश है - राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से दस वर्ष के अन्दर 14 वर्ष की आयु के बच्चे को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा और बस तभी से हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने की ओर ठोस कदम उठाए गए। जैसा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के अन्तर्गत राज्य के निर्धारित नीति निदेशक तत्वों के अन्तर्गत संविधान के अध्याय 4 में शामिल था, जिसे राज्य को क्रियान्वित करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था, किन्तु इसे अब 86वें संविधान संशोधन अधिनियम 2002 के माध्यम से संविधान में एक नया उपबन्ध (Article 21A in Part-III) उपबन्ध सम्मिलित किया गया अर्थात् इसे अब मूलभूत अधिकार की श्रेणी में ला दिया गया है। अब कोई भी 6-14 वर्ष की आयु का बालक शिक्षा को निःशुल्क प्राप्त करने के लिए राज्य को वैधानिक रूप से बाध्य कर सकता है। यह सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की दशा में राज्य द्वारा किया गया महत्त्वपूर्ण कदम है।

सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु प्रमुख कार्य योजनाएं, जैसे - 1957 में अखिल भारतीय प्राथमीय शिक्षा परिषद (AICEE) का गठन किया गया। 1979 में निरौपचारिक शिक्षा (Non-Formal Education), 1987-88 में ब्लैक बोर्ड योजना, 1994 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), 1995 में राष्ट्रीया कोषाहार सहायता कार्यक्रम, 1987-88 में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, 2001 में शिक्षा गारंटी योजना, 1998 में जनशाला कार्यक्रम, 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, 1992 में लोक जुंबिश परियोजना, 1995 में मिड-डे-मील योजना, 2000 में सर्वशिक्षा अभियान व 2001 में शिक्षा गारंटी योजना आदि देश में ऐसी तमाम योजनाएं हैं।

## अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा वस्तुतः वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य बेहतर मनुष्य बनता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी इस दुनिया को और बेहतर दुनिया बनाने का संकल्प और कौशल अर्जित करता है। शिक्षा अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। सिखाने वाला (शिक्षक) और सीखने वाला (विद्यार्थी) सदैव एक दूसरे से कैसे सीखने को तत्पर रहें यानी शिक्षक को भी विद्यार्थी की तरह सिखाने की प्रक्रिया में संलग्न रहते हुए सीखने के कार्य में भी जुटा रहना चाहिए। शिक्षा इस रूप से ही समाज का विकास अवरुद्ध नहीं होता और शिक्षा का ढांचा भी समय के अनुरूप अपने को ढाल सकता है।

उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करना प्रस्तुत शोध प्रपत्र में प्राथमिक शिक्षा को बढावा देने के उद्देश्य से उक्त संचालित योजनाओं की प्रभाशीलता को देखने का प्रयास किया गया है। उक्त योजनाओं का उद्देश्य अधिक से अधिक बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन, कक्षा में उपस्थिति आदि है। जहाँ विश्व में 14 करोड़ से अधिक बच्चे स्कूल नहीं जाते, वहीं भारत में 6 से 14 आयु वर्ग के लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थी स्कूलों में जा रहे हैं। फिर भी भारत में लगभग 5 करोड़ विद्यार्थी स्कूल नहीं जा रहे हैं। उनमें 3 करोड़ लड़कियाँ तथा 2 करोड़ लड़के हैं।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु चलाई गई विभिन्न योजनाओं के फलस्वरूप हमारे प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या घटती गई। इसी कारण हमें प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावकारिता के अध्ययन की आवश्कता महसूस हुई।

आज के अशान्त एवं सांस्कृतिक संघर्ष के युग में "हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे हमारे भीतर सदगुणों, सामाजिक मूल्यों का समावेश हो सके। वर्तमान में देश की शिक्षा व्यवस्था अपने वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पा रही है। समाज में अराजकता, अनैतिकता, सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है इसके लिए कहीं न कहीं हमारी शिक्षा व्यवस्था भी जिम्मेदार है।

कई योजनाओं में देखा गया है कि एक योजना एक राज्य में तो सफलतापूर्वक चली है तो दूसरे राज्य में पूर्णरूप से असफल हुई है। ऐसा सामाजिक, प्रशासनिक, राजनीतिक व भौगोलिक कारणों से सम्भव हो जाता है। ऐसे में यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

इसी कारण प्रस्तुत अध्ययन में संचालित योजनाओं का शिक्षकों के अवलोकन पर आधारित समीक्षा करने का प्रयास किया जाएगा। उपर्युक्त योजना जनपद एटा के बेसिक स्कूलों में कितना सफल है व कितना असफल है।

## समस्या का कथन

"शिक्षकों के अभिमत पर आधारित बेसिक स्कूलों में संचालित योजनाओं की प्रभावकारिता का अध्ययन"

## अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं की प्रभावकारिता का सर्वेक्षण करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों में संचालित योजनाओं के प्रति शिक्षकों के अभिमत पर आधारित प्रभावकारिता का अध्ययन करना।

*परिकल्पनाएं* – शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नलिखित हैं –

1. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
3. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
4. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नवाचार के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
5. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नामांकन में वृद्धि के प्रयास के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
6. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री स्तर के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

7. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से भौतिक सुविधाएं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
8. पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## शोध प्रक्रिया

अध्ययन में प्रयुक्त विधि एक सर्वेक्षण विधि है जिसमें सर्वेक्षण विधि को अपनाकर शिक्षकों के अवलोकन पर सर्वे किया है और भावी अध्ययन हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

**जनसंख्या**– प्रस्तावित अध्ययन जनपद एटा के समस्त प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को लेकर किया गया है।

**न्यादर्श** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनपद एटा के 50 प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है। जिसमें से 200 शिक्षकों (120 पुरुष शिक्षक एवं 80 महिला शिक्षकों) को शामिल किया गया है।

**मापन के उपकरण** – वर्तमान शोध के लिए अनुसंधानकर्ता ने उद्‌देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए स्वयं शिक्षक दृष्टिकोण मापनी (अभिमत) का निमार्ण किया है।

**शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) मापनी** – शोध छात्र द्वारा निर्मित इस मापनी में तीन स्केल (सहमत, असहमत एवं तटस्थ) पर मापा गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक प्राप्त आँकडों के अनुसार माध्यमान तथा काई वर्ग ($X^2$) परीक्षण आदि के द्वारा विश्लेषण एवं परिणाम की व्याख्या की गई है।

## आकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

### परिकल्पना संख्या-1

**सारणी 1:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम पाठय् सहगामी क्रियाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्रय के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 58 | 20 | 42 | + | 2 | 0.55 | * * * |
| महिला शिक्षक | 80 | 42 | 14 | 24 | + | | | |

*0.01पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारणी के अनुसार पुरुष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों के लिंग के आधार पर शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 कुल पुरुष एवं 80 कुल महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति आवृत्तियां क्रमशः 58, 42 सहमत, 20, 14 तटस्थ तथा 42, 24 असहमत आवृत्तियां प्राप्त हुई हैं। अर्थात् पुरुष एवं महिला शिक्षकों का दृष्टिकोण (अभिमत) आयाम के प्रति सकारात्मक प्रभावशीलता पाई गई।

सारणी के अवलोकन करने पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

**परिकल्पना संख्या-2**

**सारणी 2:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्र्य के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 60 | 20 | 40 | + | 2 | 0.03 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 40 | 14 | 26 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत आयाम के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों के समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 पुरुष शिक्षकों एवं 80 महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 60, 40 सहमत; 20, 14 तटस्थ तथा 40, 26 असहमत आवृत्तियाँ प्राप्त हुई। यहाँ सार्थकता पाई गई इसका अर्थ यह है कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था से पुरुष एवं महिला शिक्षक के विचार सकारात्मक प्रभावशीलता प्रकट करते हैं। परन्तु पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-3

**सारणी 3:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्र्य के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 30 | 20 | 70 | + | 2 | 0.753 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 24 | 14 | 42 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

इसी प्रकार पुरुष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 पुरुष शिक्षक तथा 80 महिला शिक्षकों से आयाम के प्रति क्रमशः 30, 24 सहमत; 20, 14 तटस्थ तथा 70, 42 असहमत आवृत्तियाँ प्राप्त हुई। इससे पता चलता है कि उनके विचार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के अन्तर्गत कार्यक्रमों का संचालन विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं पर योजनाओं की प्रभावशीलता पाई गई है। उन्हें योजनाओं से लाभ मिलता है जिससे वह अच्छी शिक्षा का संचालन करते पाए गए। परन्तु पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-4

**सारणी 4:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम योजनाओं से नवाचार के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्रय के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 68 | 24 | 28 | + | 2 | 2.366 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 54 | 12 | 14 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

शिक्षक समूह के प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण कार्यक्रम के अन्तर्गत योजना के कार्यक्रम के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों का दृष्टिकोण (अभिमत) आयाम योजनाओं से नवाचार के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों में 120 पुरुष एवं 80 महिला शिक्षकों का आयाम के प्रति क्रमशः 68, 54 सहमत 24, 12 तटस्थ तथा 28, 14 असहमत था। पुरुष एवं महिला शिक्षकों का दृष्टिकोण आयाम योजनाओं से नवाचार के प्रति सकारात्मक पाया गया परन्तु यहाँ भी पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नवाचार के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-5

**सारणी 5:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम योजनाओं से नामांकन में वृद्धि के प्रयास के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्रय के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 60 | 24 | 36 | + | 2 | 0.00 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 40 | 16 | 24 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

शिक्षकों के समूह के शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम योजना से नामांकन में वृद्धि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों के 120 पुरुष शिक्षक एवं 80 महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 60, 40 सहमत, 24, 16 तटस्थ तथा 36, 24 पाया गया। पुरुष एवं महिला शिक्षक आयाम योजनाओं से नामांकन में वृद्धि के प्रति सकारात्मक विचारों का प्रभाव समझते हैं। परन्तु पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नामांकन में वृद्धि के प्रयास के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-6

**सारणी 6:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम पाठ्य सामग्री स्तर के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्रय के अंश* | *X2 का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 32 | 18 | 70 | + | 2 | 1.321 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 18 | 09 | 53 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के अन्तर्गत योजना के कार्यक्रम के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों का दृष्टिकोण (अभिमत) आयाम पाठ्य सामग्री का स्तर के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों के 120 पुरुष एवं 80 महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 32, 18 सहमत 18, 09 तटस्थ तथा 70, 53 पाया गया। कुल पुरुष एवं कुल महिला शिक्षकों का आयाम पाठ्य सामग्री का स्तर के प्रति सकारात्मकता पाई गई। परन्तु पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री स्तर के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-7

**सारणी 7:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम योजनाओं से भौतिक सुविधाएं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातंत्रय के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरूष शिक्षक | 120 | 84 | 19 | 17 | + | 2 | 2.712 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 48 | 14 | 18 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

सारणी के अनुसार पुरुष एवं महिलाएं शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों के क्षेत्र एवं लिंग दोनों के आधार पर शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम योजना से भौतिक सुविधाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता

से प्राप्त आवृत्तियों में 120 पुरुष एवं महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति आवृत्तियाँ क्रमशः 84, 48 सहमत; 19, 14 तटस्थ 17, 18 असहमत आवृत्तियाँ प्रापत हुई हैं। पुरुष एवं महिला शिक्षक का दृष्टिकोण आयाम के प्रति सकारात्मक प्रभावशीलता पाई गई अर्थात् सरकार द्वारा चलायी गई योजनाओं से प्राथमिक विद्यालयों को भौतिक सुविधाएं प्राप्त होती हैं। यहाँ भी पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से भौतिक सुविधाएं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## परिकल्पना संख्या-8

**सारणी 8:** शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आयाम योजनाओं के प्रति क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की प्रभावशीलता की व्याख्या

| *समूह* | *संख्या* | *आवृत्तियाँ* | | | *प्रभावशीलता* | df *स्वातन्त्रय के अंश* | $X^2$ *का मान* | *सार्थकता स्तर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | *सहमत* | *तटस्थ* | *असहमत* | | | | |
| पुरुष शिक्षक | 120 | 36 | 20 | 64 | + | 2 | 4.033 | *** |
| महिला शिक्षक | 80 | 16 | 10 | 54 | + | | | |

*0.01 पर सार्थक, **0.05 पर सार्थक, ***सार्थक नहीं

सारणी के अनुसार पुरुष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न शिक्षक समूहों के क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर शिक्षक दृष्टिकोण (अभिमत) के अन्तर्गत आयाम योजना में क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की प्रभावशीलता से प्राप्त आवृत्तियों के 120 पुरुष एवं 80 महिला शिक्षकों में आयाम के प्रति क्रमशः 36, 16 सहमत; 20, 10 तटस्थ तथा 64, 54 असहमत आवृत्तियाँ प्राप्त हुई। पुरुष एवं महिला शिक्षकों का आयाम के प्रति दृष्टिकोण (अभिमत) सकारात्मक पाया गया अर्थात् योजनाओं के क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की सकारात्मक प्रभावशीलता पायी गई। परन्तु यहाँ भी पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## निष्कर्ष एवं सुझाव

1. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
2. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
3. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के प्रति रुचि के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

4. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नवाचार के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पाई गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नवाचार के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
5. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनओं से नामांकन में वृद्धि के प्रयास के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से नामांकन में वृद्धि के प्रयास के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
6. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री स्तर के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत पाठ्य सामग्री स्तर के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
7. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से भौतिक सुविधाएं के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं से भौतिक सुविधाएं के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।
8. शिक्षक समूहों के शिक्षक दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक की प्रभावशीलता सकारात्मक पायी गई। परन्तु यहाँ पुरुष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण के अन्तर्गत योजनाओं के क्रियात्मक अनुसंधान के प्रति विचारों की प्रभावशीलता में कोई अन्तर नहीं है।

## सुझाव

योजनाओं के प्रति पुरुष एवं महिला दोनों सजग प्रतीत होते हैं। देश में ऐसी तमाम योजनाएं हैं, जो समाज के लगभग हर वर्ग को शिक्षा से जोड़ सकती है। शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बाद सरकार के पास समय निर्धारित है और लक्ष्य बहुत व्यापक। ऐसे में जरूरत है कि सभी योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से किया जाए वहीं देश का हर शिक्षित नागरिक देश की अगली पीढ़ी को शिक्षित करने की कुछ जिम्मेदारी अपनी ही समझे क्योंकि समाज केवल संस्थाओं व संगठनों से नहीं बल्कि हर व्यक्ति के साथ जुड़ने से ही बनता है।

## सन्दर्भ सूची

पाण्डेय, आलोक एवं वर्मा बी.एस. (2011) *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ*, साहित्य प्रकाश, आगरा

प्रो. एस.पी. गुप्ता (2014) *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

अरूण कुमार सिंह (2014) *मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलोर, वाराणसी, पुणे, पटना

डॉ. पंकज कुमार मिश्र (2014) *भारतीय शिक्षा इतिहास एवं समस्याएँ*, साहित्य प्रकाशन, आगरा

बुच, एम. बी., फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1988–1998) वाल्यूम फर्स्ट एण्ड सेकेण्ड, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

शर्मा, आर. : यूनिवर्सल एलीमेन्टरी एजुकेशन : द क्यूशनस ऑफ हाऊ, *इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटीकल वीकली*, वाल्यूम 33(26) 1998

जैन, पी. एवं फडिया, बी., *भारतीय शासन एवं राजनीति*, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा

चाणक्य, मासिक पत्रिका, *सिविल सर्विसेज* टूडे, जून 2011

*अमर उजाला*, हिन्दी दैनिक जनवरी 2015-2016

*दैनिक जागरण*, हिन्दी दैनिक जनवरी 2016